कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ।।
जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ।।
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ।।
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा ।।
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ।।
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरू नावा ।।
मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा। बुद्धि बल मरमु तोह मैं पावा ।।

दो०-राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धिनिधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान।। **2** ।।

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभु के खग गहई ।।
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं। जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ।।
गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई ।।
सोइ छल हनुमान कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ।।
ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा ।।
तहाँ जाइ देखी बन सोभा। गुंजत चंचरीक मधु लोभा ।।
नाना तरू फल फूल सुहाए। खग मृग बृंद देखि मन भाए ।।
सैल बिसाल देखि एक आगे। ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें ।।
उमा न कछु कपि कै अधिकाई। प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ।।
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ।।
अति उतंग जलनिधि चहु पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा ।।

छं०-कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना।।
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हि को गनै।
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै।। 1 ।।
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।।
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीं।। 2 ।।
करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं।।
एंहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही।
रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही।। 3 ।।